ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 255-258

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

कोरोना का निदान और पं. दीन दयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिता

रामकृष्ण उपाध्याय

समन्वयक, पं.दीन दयाल उपाध्याय शोधपीठ

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया (उ.प्र.), भारत

Received- 01.07.2020, Revised- 06.07.2020, Accepted - 13.07.2020 E-mail: dr.ramkrishna1975@gmail.com

सारांश : ***भारत दुनिया के देशों में आज भी अपनी वैचारिक पृष्ठभूमि के कारण कभी– कभी आने वाले संकटकालीन समय में अग्रणी भूमिका का निर्वाह करती रहती है । आज जब सम्पूर्ण विश्व COVID 19 से सब संत्रस्त है , भारत अपनी विशाल जनसंख्या को सीमित संसाधनों से ही संयमित – नियमित करता नजर आ रहा है । दुनिया में वर्चस्व स्थापना की प्रतिस्पर्धा में अपने अग्रणी रखने का दमखम रखने वाले अमेरिका और यूरोपीय देशों को मुहँ की खानी पड़ रही है । इसका कारण साफ है " जब पूँजीपतियों ने व्यमक्ति को आर्थिक व्यक्ति माना और समाजवादियों ने राज्य की इच्छा में व्यक्ति की इच्छा को विलुप्त कर उसे केवल एक उत्पादक साधन मानकर उसका यदि पूँजीपतियों ने एक ओर शोषण किया तो दूसरी तथाकथित साम्यवादियों ने उनको दमित किया। दोनों ने ही व्यक्ति की उपेक्षा की उनके बीच केवल अन्तर शब्दों का रहा । वर्तमान परिस्थतियों के लिए उन्ही पूँजीपतियों और साम्यवादी देशों की विकास की होड के लिए ज्ञान – विज्ञान का मनुष्य के माध्यम से कुछ दुरुपयोग कर भीषण उत्पात मचाना प्रमुख कारण है।***

कुंजीभूत शब्द– पूँजीपतियों, आर्थिक, समाजवादियों, विलुप्त, उत्पादक, साधन, साम्यवादियों, अन्तर ।

1947 में आजादी तो अंग्रेजों ने दे दी परन्तु स्थानिक खुशबू लिए राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्थाओं को नष्ट–भष्ट करते हुए औपनिवेशिक उदेश्यों को साधने वाली राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था लाद गए। गोरे अंग्रेजों की जगह रंग–रूप से तो भारतीय परन्तु दिल दिमाग से अंग्रेजों का शासन पुनः शुरू हो गया। भारतीय संस्कृति के अधिष्ठान जिसके लिए भारतीय जनमानस ने बलिदान दिये थे, की जगह रंग–बिरंगी समाजवादी और साम्यवादी विचार धाराओं की चमक–दमक में भारत माता का गला घोंटा जाने लगा था। देश में त्याग और तप की जगह पाश्चात्य भोगवादी सोच का बोलबाला बढ़ने लगा। देश की आबादी के 90 प्रतिशत लोग 10 प्रतिशत सम्पति में त्रस्त और 10 प्रतिशत आबादी 90 प्रतिशत के सम्पति के भोग बिलास में व्यस्त हो गयी। ऐसी परिस्थिति में एक ऐसे आर्थिक तंत्र को खड़ा करने की जरूरत महसूस हुई जिसकी गहरी समझ तत्कालीन चिंतक पं0 दीनदयाल उपाध्याय के पास थी। वह किसी भी समस्या का तात्कालिक निदान करने के साथ–साथ स्थायी समाधान की खोज उनके विचारों में परिलक्षित होती है। इस प्रक्रिया में पोशक तत्व के नाते उनके स्तम्भ लेखन और पुस्तकों के भावों को सविस्तार से समझा जाना चाहिए जो वर्तमान में भारत को COVID.19 के स्वरूप में आतंकित किए हुए है। इस परिप्रेक्ष्य में दी0द0 जी के विचार आज भी भारत के उद्धार के लिए प्रासंगिक है– वर्तमान COVID.19 के आतंक के संदर्भ में दीन दयाल जी के विचारों की निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर आज भी उपादेयता बतायी जा सकती है–

1– विकसित देश और भारत पर COVID.19 के प्रभाव

2– तबलीगी जमात COVID.19 और भारत

3– प्रवासी मजदूर समस्या और COVID.19

4– लाकडाउन में जान है तो जहान है और जान भी जहान भी जब हम विकसित देशों में वर्तमान COVID.19 के प्रभाव का विश्लेषण करते हुए उसका भारत के संदर्भ में भी प्रभाव का मूल्यांकन करते है तो पाते हैं कि अमेरिका और अन्य यूरोपीय देश जिन्होंने प्रकृति का शोषण कर विकास प्रतिस्पर्धा में भीषण उत्पात मचा रखा है वे सबसे अधिक प्रभावित है। आंकड़ों के अनुसार अमेरिका जो विश्व में अपनी दादागिरी और वर्चस्व स्थापित करने में अपना धाक मानता है के यहाँ 10 लाख से अधिक संक्रमित हो चुके हैं उनमें से 60 हजार से अधिक लोग काल कवलित हो चुके हैं ठीक भी लोग हो रहे हैं परन्तु यदि मौत का प्रतिशत चार से अधिक तो ठीक होने वालों का प्रतिशत लगभग 6 रहा जबकि भारत में मौत का प्रतिशत लगभग 3 से कम और ठीक होने का प्रतिशत लगभग 15 से अधिक रहा।

इस संदर्भ में दीन दयाल जी के एकात्म मानव दर्षन की उपादेयता प्रमाणित होती है भारत में "ईश्वर अंश जीव अविनाशी" कि मान्यता रही है। दी0 द0 ने अपने एकात्म मानव दर्शन में बताया है कि व्यक्ति शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समुच्य है। व्यक्ति की यात्रा शरीर से

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-1, Issues-16 YEAR- June. -2020

प्रारम्भ हो आत्मा और परमात्मा तक जाती है इसे दुनिया में व्यक्ति, समष्टि, सृष्टि और परमेष्टि के रूप में व्यक्त किया है। शीवोहम् शिवोमृत्वा की कल्पना रही है अर्थात शरीर शिव है– शिव ही कल्याण का देवता है अर्थात लोक कल्याण के लिए है। आत्मा को परमेष्टि से मिलाने की बात है अर्थात– आत्मा ही परमात्मा का अंश है उससे अलग कुछ भी नहीं है जबकि पाश्चात्य जगत प्रथम तीन (षरीर, मन, बुद्धि) का ही विचार किया और चौथें का विचार अपनी–अपनी ढपली अपना–अपना राग आधार पर अपने–अपने पंथ–सम्प्रदाय बनाकर अपने–अपने विकास का मार्ग ढूंढने में लग गए। पश्चिमी ज्ञान–विज्ञान ने भौतिक सुख और साधन की पराकाष्ठा की होड़ में प्रकृति के शोषण की जो क्रूरता किया उसी का परिणाम– एक झलक है वर्तमान COVID.19 । अगर ये दुनिया अपने भाशण और सिद्धान्त चाहे वो Global Warming पर हो या ओजोन रक्षा से संबन्धित पेरिस (Cop25) वार्ता हो, को व्यवहार–अभ्यास में नही लाया गया तो जैसे प्राचीन काल में किन्हीं कारणों से बड़े–बड़े जीव–जन्तु (डायनासारस आदि) विलुप्त हो गए कोई आश्चर्य नही कि मानव जगत पर भी घोर संकट के संकेत आने लगें।

दी0द0 जी भारतीय ऋषि/मुनि परम्परा के संतों में से ही एक चिंतक हैं जिन्होंने व्यक्ति से परमेष्टि की अवधारणा को सबके सामने रखते हुए तीसरे विकल्प को सुझाया हैं। एकात्म मानव दर्षन का विचार देते हुए कहते हैं कि व्यक्ति को न्यूनतम आवश्यक आवश्यकता प्राप्त होना ही चाहिए। परन्तु उसे अपनी हवस को पूर्ण करने के लिए प्रकृति का शोषण नही करना चाहिए। प्रकृति उसकी इच्छा तो पूर्ण कर सकती है परन्तु उसके हवस, लालच को पूर्ण नही कर सकती। आज जो वर्तमान स्थिति उत्पन्न हुई है वह मनुष्य की लालच और ख्वाहिसों की राक्षस प्रवृति के कारण। पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित भारतीय महानगर भी भारत के अन्य नगरों की तुलना में COVID-19 से अधिक प्रभावित हुए हैं। ज्ञान–विज्ञान द्वारा विकास करने की अंधी दौड़ की प्रतिस्पर्धा ने प्रकृति पर ही जब अत्याचार करना आरम्भ किया तो भूल गया कि शाश्वत को नश्वर जीव कष्ट देने का दुरभि प्रयास तो कर सकता हैं परंतु उसे परास्त नहीं कर सकता। ऐसी स्थिति में शाश्वत प्रकृति जब दुःखी होती है तो उसे अपना आक्रोश व्यक्त करने के सिवाय कोई चारा नहीं रह जाता है। यद्यपि कि वह स्वयं पर फल–फूल रहे जीव–जन्तु–वानस्पति प्राणियों को खुद कश्ट और नष्ट नही करना चाहता परन्तु उसके दुःख की अभिव्यक्ति कुछ अधिक क्रूर और उपचारिक रूप में होती है। वह भूकंप, भूचाल, ज्वालामुखी, बाढ़, सूखा, तूफान, महामारी–सार्स, कोरोना, हैजा, प्लेग, लू आदि दूसरे माध्यम से अपना संतुलन बनाती है जिसका असर तदनुसार दुनिया पर पड़ता है इसी का असर वर्तमान समय में सम्पूर्ण दुनिया में सुनाई–दिखाई पड़ रहा है।

COVID-19 के इस महामारी के समय केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा जनजागरण द्वारा विभिन्न मौकों पर यह बताया जाता रहा कि जनता को कब क्या करना है ? 19 मार्च को प्रधानमंत्री द्वारा 22 मार्च को पूरे देश में लाकडाउन का आदेश तथा पुनः 23 मार्च को 25 मार्च से पूरे देश में 21 दिन लाकडाउन के संदेश के बावजूद दिल्ली के अंदर तबलीगी जमात द्वारा हजारों लोगों को एक साथ बुलाकर उपदेश देना और सरकार के निर्देशों–आदेशों कि ओर कुछ लोगों द्वारा संकेत करने पर उसके मुखिया मौलाना साद द्वारा यह कहा जाना कि "यदि मौत आये और वह इसी स्थान पर आ जाये तो इससे बेहतर कुछ हो ही नहीं सकता" जैसे आत्मघाती या देष के शासन–कानून से ऊपर अपना आदेश चलाकर जमात के लोगों में जुनून पैदा कर देश में आत्मघाती (कोरोना संक्रमित व्यक्ति) लोगों को प्रकारान्तर में तैयार किया। 28–29 कि रात्रि राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री अजीत डोभाल कि सख्ती के बाद, मुखिया साद तो अब तक लापता है शेष जमात के लोग जो 15 विभिन्न देशों और देश के 21 राज्यों से आयें थे कोरोना महामारी वायरस के वाहक बन कर दूरे देष को संक्रमित करने का अक्षम्य अपराध कर देश के लॉकडाउन अभियान को काफी हद तक क्षति पहुंचाये। तबलीगी जमात पर सऊदी अरबिया, तजाकिस्तान एवं अनेक मुस्लिम देशों में उनके जुनूनी हरकतों के कारण कहीं बैन तो कहीं रोक लगी हुई है। तबलीगी जमात के लोगों ने राज्यादेश और निर्देषों का जिस प्रकार से उल्लंघन और नजरन्दाज कर उपेक्षा की वह राष्ट्र के लिए घातक होता जा रहा है। तबलीगी जमात के लोग भारत के पंथनिरपेक्ष भाव की गलत ढंग से व्याख्या कर दुरूपयोग करने की कोशिश कर रहे हैं। राजधर्म, राज्य के पंथ निरपेक्ष भाव से कहीं ऊपर हैं। राजधर्म, राज्य को सुव्यस्थित रखने के लिए नियम कानून बना उसका नियमन कराने का अधिकार रखता है जिसे सभी पंथ और संप्रदाय को उसको अपनाना और मानना पड़ता है। इसके इतर चलने वाला राजधर्म का विरोधी माना जाता है और वह दण्ड का भागी होता हैं। पंथ और सम्प्रदाय अपनी–अपनी पूजा पद्धति और अपने निश्चित कर्मकांड से संबन्धित मात्र रहते हैं। ये अपनों के बीच उत्पन्न विकृतियों को दूर करने के साधन मात्र होते है परन्तु जब संबन्धित सम्प्रदाय के लोग अपने पंथ और वाद से साध्यमान राजधर्म को अपने अनुकूल चलाने का प्रयास

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-1, Issues-16 YEAR- June. -2020

करते है तो उनके ये कार्य अन्य पंथ, सम्प्रदाय का तिरस्कार और उपेक्षा करते हुए कष्ट देने लगते है और वे अभिमानव अपना विवेक भी खो देते है उनके ये व्यवहार राजधर्म के पंथनिरपेक्षता को हानि पहुंचाती है और सद्भाव के वातावरण को खतरा उत्पन हो जाता है। इस सम्बन्ध में तबलीगी जमात के प्रचार–प्रसार पर भी केन्द्र/राज्य को अत्यन्त गम्भीरता से विचार करना चाहिए। यही राज्य को दण्डनीति धारण कर संबन्धित को राजधर्म का पाठ सख्ती से पढ़ानी चाहिए। यह अवश्य ध्यान रहे कि संबन्धित पंथ के यदि कुछ विवेकहीन उद्दण्ड लोग ऐसा करते है तो जैसे हाथ में फोड़ा निकलने पर हाथ नहीं काटा जाता है हाथ को सुरक्षित और स्वस्थ रखने और सम्पूर्ण शरीर के संतुलन का ध्यान रखते हुए फोड़ें की शल्य क्रिया की जाती है। वैसे ही इस कार्य को अत्यन्त संवेदना के साथ राजधर्मानुसार करना अपरिहार्य हो जाता है। उसे शिघ्रताशीघ्र सम्पन्न करना चाहिए।

कोरोना महामारी से भारत के विभिन्न राज्यों विशेषकर औद्योगिक महानगरों में प्रवासी भारतीय मजदूरों और कारीगरों की समस्या उत्पन हो गयी है। पिछले दिनों देखने को मिला कि औद्योगिक महानगरों और शहरों से COVID-19 के कारण एकाएक मजदूर और कारीगर अपने–अपने घरों की ओर पलायन हेतु चल पड़े जिस कारण एक भीषण समस्या उत्पन हो गई। दी0द0 जी का मानना था कि भारत गाँवों में बसता है। 70 प्रतिशत आबादी गाँवों में निवास करती है। अंग्रेजों ने अपने स्वार्थ के कारण केवल उन क्षेत्रों में कल कारखानें और पुल बनवाये जहाँ से उत्पाद को आसानी से उनके हित में लाया ले जाया जा सके। अंग्रेजों ने भारतीय शिल्प, कला और कारीगरों के कार्य को बर्बाद कर उन्हें मजदूर और गुलाम बनाकर अपने हित में सोचते और लगाते रहे। इससे भारत के गाँव और कस्बों के छोटे–छोटे कुटीर उद्योग और लघु उद्योग तथा शिल्प बर्बाद होते गये और गाँव–कस्बे उजडते गये। अफसोस तब और अधिक हुआ जब आजाद भारत में भी गाँवों और कस्बों को बसाने तथा विकास करने के लिए समुचित प्रकार से नीति–नियम नही बनाये गए। गाँधी जी और दीन दयाल जी दोनों ही विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था के पक्षधर थे परन्तु तत्कालीन सरकारों ने बड़े–बड़े उद्योगों और महानगरीय विकास को अधिक महत्व दिया। गाँवों और कस्बों में रोजगार की व्यवस्था न करने के कारण ग्रामीण आबादी रोजगार हेतु शहरों, महानगरों और औद्योगिक क्षेत्रों की ओर पलायन करने लगी। इससे ग्रामों का उजड़ना जारी रहा और महानगरों में बढ़ते भीड़ के दबाव ने महानगरों में आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता की समस्या के साथ–साथ भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया। COVID-19 के समय लॉकडाउन के कारण कल कारखानों के बंद होने, कल–कारखानों के मालिकों द्वारा मजदूरों और कारीगरों के साथ मानवीय सहानुभूति के व्यवहार न अपनाने, सरकारों द्वारा समय से उनके खाने–पीने का समुचित प्रबन्धन न करने कारीगरों के बीच सही ढंग से जन–जागरण न करने पर कोरोना से कब किसकी मृत्यु कहाँ हो जाएगी जैसी व्याप्त भयावह स्थितियों ने प्रवासी मजदूरों और कारीगरों को पलायन के लिए बाध्य कर दिया। यदि दी0 द0 जी के 1965 के भाषण का अंश मात्र भी पालन किया गया होता अर्थात "हर खेत को पानी और हर हाथ को काम" तो न भीड़ का भगदड़ मिलता और न भारत में COVID-19 में इतना प्रसार होता क्योंकि दी0 द0 जी का कहना था की हर व्यक्ति को न्यूनतम आवश्यक आवश्यकता की पूर्ति होनी चाहिये अर्थात "रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य और सम्मान" जब किसी को कही भी प्राप्त होगा वह देश को सशक्त और समृद्ध करने में अपना जी–जान लगा देगा। दी0 द0 जी कहते हैं कि यह तभी सम्भव होगा जब गाँव समृद्ध होंगे, गाँव समृद्ध तभी होंगे जब ग्रामीणों के उपर्युक्त छः भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति की व्यवस्था राज्य करें।

इस महामारी ने पूरे विश्व को कहीं न कहीं लॉकडाउन कर अपंग बना दिया है। भारत में भी लॉकडाउन महीने से ऊपर हो गया। लगभग 40 करोड़ असंगठित क्षेत्र के मजदूरों की समस्या भारत की सबसे बड़ी समस्या बन कर उभड़ने वाली है। कहा जाता है की कभी–कभी महामारी अवसर को भी जन्म देती है। इस समय रेल, बस, वायु–सेवा, कल–कारखानें सब बंद पड़े है। अधिकांश मजदूर, कारीगर किसी तरह से अपने–अपने घरों पर या तो पहुँच गए हैं या पहुँचने को उद्यत है। ऐसी स्थिति में केन्द्र व राज्य सरकारों को भविष्य में पुनः इस प्रकार के भगदड़ की स्थिति न बनने पाये के बारे में विचार कर नये स्तर से ग्रामीण और कस्बों के लिए योजना बनाने में षीघ्रता करनी चाहिए। COVID-19 ने सभी के मन में ऐसा भय पैदा कर दिया है कि यदि उन्हें घर पर गाँव के आस–पास कोई भी रोजगार उपलब्ध हो जाएगा तो वे उसे करने को तत्पर हो जाऐगें।

दी0 द0 जी कहते है कि पिछले सदियों में जिस अर्थव्यवस्था का भारत में विकास हुआ उसने भारत और पश्चिम के औद्योगिक देशों को एक दूसरे का पूरक बना दिया। इससे भारत के हितों का संरक्षण नहीं हुआ बल्कि उसका बराबर शोषण ही होता रहा। किन्तु इस शोषण की क्रिया में पाश्चात्य आर्थिक हितों में भारत के कुछ वर्गों को भी अपने अभिकर्ता के रूप में साझीदार बना लिया। देश में अपने स्वत्व और सामर्थ्य के विकास के स्थान पर पराधीनता

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-1, Issues-16 YEAR- June. -2020

और परावलम्बन का भाव घर कर गया। आत्महीनता का यह भाव घुन की तरह राष्ट्र की जड़ें खोखली करती रही। इस प्रकार से जर्जर–मूल राष्ट्र कभी भी झंझावातों में खड़ा नहीं हो सकता।

दीन दयाल जी भारतीय समाज विज्ञान के कुशल अन्वेषक और अध्येता थे। वे समझ चुके थे कि सच्चा भारत गाँव के कच्चें मकानों और झोपड़ियों में रहता है। गाँव में रहने वाले करोड़ों किसानों, मजदूरों, श्रमिकों का जो परम्परागत स्वरोजगार है, उसको तकनीकी और आर्थिक सहयोग देकर उन्नत करने की जरूरत है। विदेशी मशीनों और अन्य उपभोक्ता वस्तुओं का प्रयोग करना विदेशियों की आर्थिक दासता को स्वीकार करना है हमारी समाज रचना के अंतर्गत दस्तकारी के आधार पर जो गाँव–गाँव में छोटे–छोटे कुटीर उद्योग धन्धे चल रहे हैं जैसे बढ़ाई, लुहारी, चर्मकार, स्वर्णकार, बुनकर, दर्जी, कुम्हार, तेली, चित्रकार तथा कस्बों के फिटर, टर्नर, इलेक्ट्रिशियन, वेल्डर, कम्प्यूटर, मैकेनिक, ड्राईविंग, नर्सिंग, इ–मोटर आदि को सहयोग करके उन्नत किया जाय। इसके लिए छोटे–छोटे स्वदेशी मशीनों को भी विकसित कर अधिक उत्पादन के अवसर उपलब्ध कराये जाये। स्वदेशी वस्तुओं के निर्माण और उनके विक्रय की व्यवस्था की जाये, समाज में वर्ग संघर्ष की जगह वर्ग सहयोग की भावना पैदा की जाये जिससे शहरी प्रतिस्पर्धा से वे पराजित न हो सकें।

दीन दयाल जी बड़े उद्योगों के विरोधी नहीं रहे उनके अनुसार उत्पादक वस्तुएं बड़े उद्योग तैयार करें तथा उपभोग की वस्तुएं छोटे उद्योगों द्वारा बनायी जाये। उपभोग में आने वाली वस्तुओं, छोटे–छोटे पार्ट्स, घरेलू उद्योगों से हस्तकौशल, हस्तशिल्पकारों द्वारा तैयार किये जायें जैसा की स्विट्जरलैण्ड, जापान और चीन में किया जा रहा है। जापान में साइकिल, मोटर साइकिल, मोटरकार, बसों, रेलों, जहाजों के छोटे–छोटे पुर्जे घरों में बनते हैं, उनके संगठित एकीकरण का आकार बड़े–बड़े कारखानों में दिया जाता है। इससे गाँवों में वेरोजगारी दूर होगी, गाँव के कच्चें सामानों से गाँवों और कस्बों में स्वदेषी वस्तुएँ निर्मित होने लगेंगी। बाजार और मेले लगने लगेंगे, क्रय–विक्रय का कारोबार तेजी पकड़ेगा। सामान्य लोगों को रोजगार और आय प्राप्त होगा। इस प्रकार विकास का चक्र शुरू हो जायेगा और गॉव से पलायन बंद हो जायेगा। महामारी में ग्रामीण पलायन से बढ़ने वाली भीड़, आवासीय समस्या, चिकित्सा, शिक्षा, मनोरंजन की समस्या स्वमेय समाप्त हो जाएगी।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में जिस प्रकार जापान समेत अमेरिका और यूरोपीय देष चीन के प्रति आक्रोशित उससे चीन के प्रति उनका विश्वास घटा है और प्रधानमंत्री द्वारा उन देशों के प्रति सहानभूति और सहयोगी दृष्टिकोण ने उन देशों का भारत के प्रति विश्वास बढ़ा है या बढ़ाया हैं। इससे निश्चित ही भविश्य में चीन में स्थापित बहुराष्ट्रीय कम्पनीयां भारत की ओर रूख कर सकती है इस परिस्थिति में भारत के लोगों को अपने ज्ञान–विज्ञान और कार्यकुशलता को बढ़ाकर विदेशी कंपनियों का दिल जीतना होगा। इससे देष के कच्चे माल की मांग बढ़ेगी, उत्पादन हेतु कुशल तकनीशियन और मजदूरों की भी मांग बढ़ेगी। इस प्रकार देष में रोजगार, आय और मांग बढ़ेगी और भारत उत्पादक–उत्पादन का एक हब बन सकता है। इसलिए आवश्यक है कि इस महामारी में उत्पन्न वैकुअम/निर्वात को अवसर में तब्दील करने का एक सुनहरा मौका भारत को मिल सकता है, जिसे भारत को खोना नही चाहिए। अर्थशास्त्रियों का मानना है कि भारत आगामी वर्षों से एक ऊँचे विकास दर को प्राप्त करने में सफल होगा। इस प्रकार यदि देश का विकास करना है तो स्वदेशी आधारित विकास माड्ल पर विचार करना होगा। गाँवों को सामाजिक आर्थिक रूप से विकसित करने के लिए युगानुकूल और देशानुकूल व्यवस्था को अपनाना होगा। यदि इसमें कुछ देर भी लगे तो भी वह स्थायी और सर्वहितकर राष्ट्रीय हल होगा। दी0 द0 जी का स्पष्ट मत था की गाँवों की संपन्नता ही भारत की संपन्नता है। बिना गाँवों के सम्पन्न हुए भारत कभी भी खुशहाल और सम्पन्न नहीं हो सकता।

*****